Hindi milap Dt 13/06/16

डेली हिन्दी मिलाप, हैदराबाद | www.webmilap.com

संतोषप्रद होता है अपने शहर में परियोजनाएँ बनाना : बी.एन. राजेश्वर

बी.एन. राजेश्वर हैदराबाद मेट्रो रेल के महाप्रबंधक (कार्य) हैं। हैदराबाद के लंगरहौज़ में गत 30 मार्च, 1952 को जन्मे राजेश्वर की प्राथमिक शिक्षा लंगरहौज़ सरकारी स्कूल, माध्यमिक शिक्षा कुलसुमपुरा स्कूल तथा हाई स्कूल की शिक्षा सिटी कॉलिज से हुई। पॉलिटेक्निक के बाद वे राज्य के पब्लिक हेल्थ एंड म्युनिसिपल इंजीनियरिंग विभाग में सहायक अभियंता के रूप में नियुक्त हुए। बाद में उन्होंने इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। तेलंगाना के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा हैदराबाद की महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं के वे प्रभारी रहे और आज हैदराबाद मेट्रो रेल में महाप्रबंधक (कार्य) का पद संभाल रहे हैं।

सप्ताह के साक्षात्कार में उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार हैं...

क्या पहले से तय था कि आप सरकारी नौकरी ही करेंगे?

सरकारी नौकरी नहीं, लेकिन इंजीनियर बनना तय था। पिताजी मिलिटरी में इंजीनियरिंग सेवाएँ देते थे। उन्होंने आईआईटी डिप्लोमा किया था। वे चाहते थे कि उनका पुत्र भी इसी क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करे। इसलिये मैंने पॉलिटेक्निक की और राज्य के सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं म्युनिसिपल इंजीनियरिंग विभाग में नियुक्त हो गया। सेवा में रहते हुए मैंने अपने पिता द्वारा देखा गया उच्च शिक्षा का ख्वाब पूरा किया। उस्मानिया विश्वविद्यालय से स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में मैंने स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की।

आप तेलुगु माध्यम के विद्यार्थी रहे। क्या इंजीनियरिंग की उन्नत शिक्षा प्राप्त करने में कुछ बाधाएँ आयीं?

मेरी शिक्षा आठवीं तक तेलुगु माध्यम से रही। इत्तेफाक या किस्मत कहिए कि जब सिटी कॉलेज में 9वीं कक्षा में प्रवेश लिया, तो पहली बार वहाँ अंग्रेज़ी माध्यम हाई स्कूल खुल रहा था। आठवीं के अच्छे अंकों देखते हुए मेरा नाम अंग्रेज़ी माध्यम में दर्ज कर लिया गया। इस घटना पर पिताजी तब के प्रिंसिपल वेंकटराम रेड्डी से मिलने गये, तो उन्होंने कहा कि जब सारे लोग बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ाना चाहते हैं, तो आपको बच्चे का अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ना क्यों नहीं पसंद। इससे उसका भविष्य और उज्ज्वल होगा। इसके बाद पिताजी मुझे तेलुगु माध्यम में नहीं डालने के लिये राजी हो गये। मुझे इसका लाभ भी मिला। मेरे कुछ साथी अंग्रेज़ी भाषा में संपर्क कौशल की कमी के कारण बड़ी उपलब्धियों तक नहीं पहुँच सके। इनमें से जो पहुँचे, उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि इंजीनियरिंग की अधिकतर जानकारी अंग्रेज़ी में ही उपलब्ध है।

सरकारी सेवा में रहते हुए आपकी खास चुनौतियाँ एवं उपलब्धियाँ?

मेरी पहली नियुक्ति निज़ामाबाद में हुई। कुछ गाँवों को पूर्ण रूप से पेयजलापूर्ति योजना से जोड़ना था। आर्मूर और बोध दो ग्रामों में सफल रूप से पेयजल योजना पर अमलावरी की गयी। इसके बाद मैंने उच्च शिक्षा में आगे पढ़ने के लिए अपना स्थानांतरण जीएचएमसी में करवाया। यहाँ बहुत सारी परियोजनाओं को अपनी निगरानी में पूरा करने का अवसर मिला। जब उन परियोजनाओं को देखता हूँ, तो बड़ा संतोष होता है। अपनी इंजीनियरिंग की उपलब्धियाँ अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को दिखाकर गर्व होता है। विशेषकर सिकंदराबाद में हरिहर कला

सप्ताह का साक्षात्कार

सलीम

भवन की आधारशिला से लेकर उद्घाटन तक मैं उस परियोजना का प्रभारी था। राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने इस परियोजना का उद्घाटन किया था। संजय पार्क, कृष्णकांत पार्क, शालिबंडा पार्क जैसे पार्कों के निर्माण कार्य की जिम्मेदारी पूरी मैंने की। जब हैदराबाद में बड़े पैमाने पर सड़क विस्तारीकरण हुआ, तो मैंने इसकी जिम्मेदारी संभाली। चंद्रायनगुट्टा, पंजागुट्टा, नलगोंडा चौराहा तथा ग्रीनलैंड फ्लाईओवर के निर्माण का नेतृत्व अभियंता के रूप में मेरे लिए गर्व का विषय रहा। अक्सर कहा जाता था कि परियोजनाएँ काफी लंबित होती हैं, लेकिन मैंने फ्लाईओवरों का निर्माण तीन साल में पूरा करवाया।

पंजागुट्टा फ्लाईओवर की दुर्घटना भी हुई थी?

हाँ, उस समय मुझे एक महीना निलंबन का सामना करना पड़ा, लेकिन जब जाँच के दौरान पाया गया कि उसमें गुणवत्ता की कोई खराबी नहीं थी, बल्कि वर्षा तेज़ होने के कारण हादसा हुआ, तो निलंबन वापस ले लिया गया। आज जब मैं अपने निर्देशन में विस्तारित की गयी सड़कों को देखता हूँ और उस रास्ते से गुज़रता हूँ, तो पिताजी की बात याद आ जाती है। वे कहते थे कि एक इंजीनियर की विशेषता यह होती है कि वह जब बूढ़ा हो जाए, तो खुद पर गर्व करने के लिए उसके द्वारा बनायी हुई कुछ चीज़ें सामने होनी चाहिए। दरअसल इन उपलब्धियों में तत्कालीन नगर निगम आयुक्तों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही। खासकर अर्जुन राव, दीपक कुमार पनवर और संजय जाजू के दौर में काफी अच्छे काम हुए। वे अभियांत्रिकी के अधिकारियों को काफी प्रोत्साहित कर रहे थे।

मेट्रो रेल के साथ जुड़ कर कैसा महसूस करते हैं?

मेट्रो से जुड़कर नया गौरव प्राप्त हुआ। जब योजना शुरू हुई, तो रिश्तियाँ अलग थीं। जब हम दूसरे विभागों में जाते थे, तो लोग हमारी ओर इशारा करके हँसते थे कि ...ये देखो मेट्रो रेल के इंजीनियर हैं। इनो मेट्रो रेल बनाते करते।... इससे मैं थोड़ा नर्वस हो जाता था, लेकिन एचएमआरएल के प्रबंध-निदेशक एनवीएस रेड्डी ने हमारे अंदर नयी ऊर्जा भरी। उन्होंने हमारी मायूसी दूर की। उस वक्त हम लोग सोचते थे कि यह परियोजना मुश्किल है, लेकिन आज हम इसे पूरा होते देख रहे हैं। मेट्रो रेल में चूँकि मैं स्ट्रक्चरल इंजीनियर था, इसलिये निर्माण के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी मेरी थी। तीनों कोरिडोरों पर जमकर काम हुआ, जो अब भी जारी है।

कभी ऐसा नहीं महसूस हुआ कि नौकरी छोड़कर कुछ और काम किया जाए?

हाँ, कभी-कभी हुआ। जब देखा कि सरकारी काम एक ही ढर्रे पर होते हैं और निजी अभियंताओं के पास बड़ी-बड़ी परियोजनाएँ थीं, तो ऐसा लगता था। हमें छोटी-छोटी परियोजनाओं से ही संतोष करना पड़ता था। इसके बाद हैदराबाद के चारों फ्लाईओवरों और मेट्रो रेल परियोजना ने मेरी मायूसी दूर कर दी। दरअसल बड़ी परियोजनाओं के लिए काम करने तथा उन्हें पूरा करने के बाद जो संतोष मिलता है, वह वेतन से कहीं अधिक होता है। सरकारी सेवा में वेतन कम होता है, लेकिन लोगों के लिए काम करने की भावना मन को सुकून प्रदान करती है।

कुछ रचनात्मक शौक?

पुराने गीत सुनने का शौक है। नयी इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी के बारे में पढ़ने तथा अधिकाधिक जानने को आतुर रहता हूँ। दूसरे इंजीनियर किस तरह काम कर रहे हैं, अच्छी परियोजनाओं से क्या सीखा जा सकता है, बस यही दिमाग में चलता रहता है।

हैदराबाद को जीने लायक शहर के रूप में किस तरह देखते हैं?

हैदराबाद बहुत ही अच्छा है। अधिकारी मुझसे कहते थे कि पुराने शहर में काम करना काफी मुश्किल है, लेकिन मैंने उल्टा महसूस किया। जब चंद्रायनगुट्टा फ्लाईओवर का काम शुरू हुआ, तो सड़क विस्तारीकरण को लेकर अधिकारी संशय में थे, लेकिन जब स्थानीय लोगों को विकास और उनके भावी जीवन के बारे में समझाया गया, तो वे लोग स्वयं सामने आये। आज भी मैं वहाँ जाता हूँ, तो लोग खाना खिलाये बिना नहीं आने देते। ऐसा माहौल दूसरे शहरों में नहीं मिलता। इतना जरूर है कि मुंबई, चेन्नई और दिल्ली में यातायात के प्रति लोगों में जो जागरूकता है, वो हैदराबाद में नहीं है।

नयी पीढ़ी के अभियंताओं को क्या संदेश देना चाहेंगे?

यही कि वे केवल परीक्षा परिणामों के अंकों तक सीमित न रहें। इंजीनियरिंग की मूलभूत शिक्षा पर स्वयं अध्ययन करें। मैंने देखा है कि नये लोग इस मामले में काफी कच्चे हैं। उन्होंने परीक्षा में अच्छे अंक तो लाये हैं, लेकिन सीखा कुछ भी नहीं है। ऐसे लोगों को प्रशिक्षण भी नहीं दिया जा सकता। वे तत्काल सेवा में लेने के योग्य भी नहीं होते। दरअसल जो भी हम पढ़ते हैं, उसे समझने का प्रयास भी करना चाहिए।